1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य समाज की सभी चल रही योजनाओं प्रकल्पों, वेबसाइट, मोबाइल एप्लीकेशन, सोशल मिडिया हैंडल्स का उपयोग करने हेतु

8750-200-300

मिस्ड कॉल करें

SMS पर प्राप्त होने वाला लिंक खोलें

वर्ष 48, अंक 35 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 23 जून, 2025 से रविवार 29 जून, 2025
विक्रमी सम्वत् 2082 सृष्टि सम्वत् 1960853126
दयानन्दाब्द : 202 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द जी के 200वें जयन्ती वर्ष
एवं
150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष

विश्व व्यापी आयोजनों की श्रृंखला ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव के समापन पर

विश्व के इतिहास में अब तक का सबसे विशाल

आर्यों का महापर्व

सार्द्ध शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नई दिल्ली

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
30 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025
दिल्ली
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

30 अक्तूबर से 2 नवम्बर, 2025

तद्नुसार कार्तिक शुक्ल 8-9-10-11, विक्रमी सम्वत् 2082

संसार के 40 से अधिक देशों से आर्यों की होगी भागीदारी

विश्व की समस्त आर्यसमाजों, प्रतिनिधि सभाओं, विद्यालयों, गुरुकुलों एवं आर्य संस्थानों से अनुरोध है कि ★ महासम्मेलन की तिथियां नोट कर लें ★ इन तिथियों में अपना कोई भी आयोजन न रखें ★ सभी को सूचित करें और ★ प्रत्येक आर्यजन सपरिवार इष्ट मित्रों सहित अभी से दिल्ली पहुंचने की तैयारियां करें।

निवेदक :- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ★ ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति ★ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001; www.thearyasamaj.org

देववाणी-संस्कृत

प्रभु की प्राप्ति

वेद-स्वाध्याय

सदा व इन्द्रश्चर्कृषदा उपो नु स सपर्यन्। न देवो वृतः शूर इन्द्रः।।
साम० पू० 3।1।1।3
ऋषिः- प्रगाथः काण्वः।। देवता-इन्द्रः।। छन्दः-गायत्री।।

शब्दार्थ- हे मनुष्यो! **इन्द्रः** = परमेश्वर **वः** = तुम्हें **सदा** = सदैव **आचर्कृषत्** = अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। **सः** = वह **नु** = निःसन्देह **उप उ** = समीप ही, समीपता के साथ **सपर्यन्** = तुम्हारी सेवा करता हुआ विद्यमान है। **शूरः इन्द्रः देवः** = वह महापराक्रमी इन्द्रदेव **वृतः** = ढका हुआ, आच्छादित **न** = नहीं है।

विनय- हे मनुष्यों! तुम अपने परमात्मा से प्रेम क्यों नही करते? जहाँ हरिकथा होती है वहाँ से तुम भाग आते हो। बार-बार प्रभु-चर्चा होती देखकर तुम ऊबते हो, जबकि विषयों की चर्चाएँ सुनने के लिए सदा लालायित रहते हो। तुम्हें उस अपने पिता से इतना हटाव क्यों है? तुम चाहे जो करो, वह देव तो तुम्हें कभी भुला नहीं सकता। वह तो तुम्हें प्रेम से अपनी ओर आकर्षित ही कर रहा है, सदा आकर्षित कर रहा है, निरन्तर अपनी ओर खींच रहा है। तुम जानो या न जानो, पर वह अत्यन्त समीपता के साथ माता की भाँति तुम-पुत्रों की निरन्तर परिचर्या भी कर रहा है। वह परमेश्वर हमारे रोम-रोम में रमा हुआ, हमारे एक-एक श्वास के साथ आता-जाता हुआ, हमारे मन के एक-एक चिन्तन के साथ तद्रूप हुआ-हुआ और क्या कहें, हमारी आत्मा-की-आत्मा होकर, एक अकल्पनीय एकता के साथ हमसे जुड़ा हुआ है। हमें संसार में जो कुछ प्रेम, आराम, वात्सल्य, भोग, सेवा, सुख मिल रहा है वह किन्हीं इष्ट-मित्रों या प्राकृतिक वस्तुओं से नहीं मिल रहा है, वह सब हमारे उस एक अनन्य सम्बन्धी परम दयालु प्रभु से ही मिल रहा है। वह केवल हमें अपनी ओर खींच ही नहीं रहा है, अपितु अतिसमीपता से निरन्तर हमारी सेवा भी कर रहा है, प्रेम-प्रेरित होकर हमारी सेवा कर रहा है, हमारा पालन, पोषण, रक्षण, दुःखनिवारण आदि सब परिचर्या कर रहा है। अरे! वह तो कहीं छिपा हुआ भी नहीं है। उसके और हमारे बीच में कोई भी आवरण नहीं है। उसे ढका हुआ, आच्छादित भी कौन कहता है?

हे मनुष्यों! सच बात तो यह है कि यदि हम उसके इस प्रेमाकर्षण को जानने लग जाएँ-वे प्रभुदेव सदा प्रेम से हमें अपनी ओर खींच रहे हैं, यह हम सचमुच अनुभव करने लग जाएँ, तो हमें यह भी दीख जाए कि वे हमारे अत्यन्त निकट हैं और अत्यन्त निकटता के साथ हमारी सेवा-शुश्रूषा कर रहे हैं और फिर एक दिन हमें यह भी दिख जाए कि वे सब ब्रह्माण्ड के रचियता महापराक्रमी इन्द्र प्रभु- जिनके विषय में परोक्षतया हम इतनी बातें सुना करते थे, वे-हमसे किसी आवरण से ढके हुए भी नहीं हैं। वे प्रत्यक्ष हमारे सामने हैं और यह दीख जाना ही परमात्मा का साक्षात्कार करना है, परम प्रभु को पा लेना है।

-: साभार:-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

शर्मसार रिश्ते-दरकता समाज : जिम्मेदारी किसकी?

समाज कहता है कि वैवाहिक रिश्ते समाज, संस्कृति और परंपराओं से निर्मित होते हैं, जबकि कानून के अनुसार शादी के लिए लड़की की आयु 18 साल और लड़के की आयु 21 साल होनी चाहिए। सामाजिक रूप से बने वैवाहिक रिश्ते अक्सर मजबूत होते हैं। विवाह एक सामाजिक संस्था है जो दो व्यक्तियों को एक साथ लाती है और उनके बीच एक भावनात्मक और सामाजिक बंधन स्थापित करती है। यह बंधन न केवल व्यक्तिगत रूप से, बल्कि परिवार और समाज के लिए भी महत्वपूर्ण है।

माना कि विवाह का अधिकार मानव स्वतंत्रता का अभिन्न हिस्सा है। अपनी पसंद से विवाह करने का अधिकार है। लेकिन पिछले दिनों की अनेकों घटनाओं ने समाज को सोचने पर विवश कर दिया है। बिहार के जमुई में एक महिला ने पति की मौजूदगी में भतीजे से दूसरी शादी कर ली। दरअसल, शादी के लगभग दो साल बाद ही महिला की नजदीकियां रिश्ते में भतीजा लगने वाले सचिन दुबे से बढ़ गई थी। इस कारण उसने रिश्ते की मर्यादा को ही तार-तार कर दिया। चाची ने रिश्ते में भतीजे लगने वाले युवक के साथ मंदिर में विवाह रचा लिया।

दूसरी घटना अलीगढ़ की पिछले दिनों चर्चा का विषय बनी रही जहाँ बेटी की शादी से 9 दिन पहले उसकी सगी मां अनीता अपने होने वाले दामाद राहुल के साथ फरार हो गई थी। इसे आजकल की मीडिया ने प्रेम कहानी बताया तो लोगों ने कहा कि इस घटना ने रिश्तों की मर्यादा तार-तार कर दिया। ऐसा ही किस्सा रामपुर में भी देखने को मिला, यहाँ अधेड़ उम्र के शख्स ने बेटे का रिश्ता जिस लड़की से तय करवाया, उसे खुद भी दिल दे बैठा। बहू को भी होने वाले ससुर से प्यार हो गया। दोनों समाज की परवाह किए बिना भाग गए। फिर शादी करके वापस लौटे। हालाँकि यह वाला किस्सा मुस्लिम समाज से है, पर किस्सा तो भारत का ही है ना?

ऐसे ही शाहजहांपुर में सगे भाई-बहन शादी करना चाहते थे, किन्तु जब परिवार ने इस पर आपत्ति उठाई, तब जाकर दोनों शांत बैठे। बिहार के अररिया से ऐसा ही एक मामला सामने आया था जब नरपतगंज की एक छोटी बेटी ने कुछ महीने पहले अपनी बड़ी बहन के पति के साथ लव मैरिज कर ली थी। इससे परिवार की बहुत बदनामी होने लगी थी। लोग परिवार को तरह-तरह के ताने देते थे। जबकि, बड़ी बेटी सदमे में चली गई थी। कई बार समझाने, झगड़ों और गांव वालों के दखल के बाद भी जब छोटी बेटी अपने फैसले पर टिकी रही, तो मां ने गुस्से में आकर ये खतरनाक कदम उठाया। उसने कुछ सुपारी किलर्स को हायर किया। फिर सुपारी किलर्स ने छोटी बेटी पर गोली चला दी।

मेरठ में एक महिला ने अपने प्रेमी के साथ मिलकर पति की हत्या कर दी। हत्या के बाद उन्होंने शव के पास सांप छोड़ दिया ताकि लगे कि सांप काटने से मौत हुई है। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट से खुलासा हुआ कि मौत गला घोंटने से हुई थी। पुलिस ने पत्नी और उसके प्रेमी को गिरफ्तार कर लिया है। दूसरा मेरठ में सौरव कुमार हत्याकांड पिछले दिनों अखबारों की सुर्खियां बना था जिसमें आरोपी पत्नी मुस्कान रस्तोगी ने अपने प्रेमी साहिल शुक्ला के साथ मिलकर पति की हत्या की और लाश को ड्रम में डालकर सीमेंट से पैक कर दिया था। हरियाणा के भिवानी में एक महिला द्वारा अपने प्रेमी संग मिलकर पति की हत्या करने की खबरें भी हम सबने सुनी थी। पटना के

.....भारतीय संस्कृति में, विवाह को सिर्फ़ दो व्यक्तियों के बीच नहीं, बल्कि दो परिवारों के बीच मिलन के रूप में देखा जाता है। विवाह को एक पवित्र बंधन के रूप में देखा जाता है, और ऐसा माना जाता है कि जोड़े सात जन्मों तक एक साथ रहेंगे। आपसी रिश्तों के जोड़ में कभी हमारा देश बेजोड़ माना जाता था। हमारे यहां जुड़ने वाले अधिकांश रिश्ते जिंदगी की डोर टूटने पर ही टूटते थे, लेकिन अब तस्वीर बदल गई है। आज की फास्ट-पेस लाइफ में रिश्ते भी तेजी से टूट रहे हैं। डिवोर्स जैसा शब्द जो पहले यदा-कदा सुनने को मिलता था, अब बहुत कॉमन हो गया है। सात जन्मों का साथ अब सात दिन या सात साल का भी मुश्किल निभ रहा है। जहाँ पहले आपसी सहमति या कानून द्वारा संबंध विच्छेद करके अलग होते थे, अब तो मारकाट मची है। .....

मसौढ़ी में व्यापारी राजेश चौधरी की दिनदहाड़े गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। पुलिस जांच में चौंकाने वाला खुलासा हुआ कि इस हत्याकांड की मास्टरमाइंड खुद मृतक की पत्नी ममता देवी थी।

अब इंदौर के ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी की हत्या की मास्टरमाइंड सोनम की खबरें तो अभी सुर्खियाँ बनी हुई हैं। अब मुरादाबाद की रहने वाली रीना सिंधु ने अपने पति रविन्द्र कुमार की हत्या बिजनौर के रहने वाले अपने प्रेमी पारितोष कुमार के साथ मिलकर कर दी।

ये मात्र कुछ खबरें हैं जबकि अगर देखा जाए रिश्ते तार-तार हो रहे हैं, मर्यादा समाज कई लोगों के लिए महज कहने-सुनने का शब्द बन चुका है। वैवाहिक रिश्ते अब रिश्ते न होकर खौफ का पर्याय बनते चले जा रहे हैं। बात सिर्फ पति की नहीं बल्कि 1 मार्च 2025 से 16 जून 2025 के बीच यानी 108 दिनों में छत्तीसगढ़ में 30 पत्नियों की हत्या हुई है।

जबकि अगर शादी की बात आती है तो भारतीय संस्कृति का एक लंबा और समृद्ध इतिहास है। इसे किसी व्यक्ति के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक माना जाता है और इसे अक्सर बड़े जोश और उत्साह के साथ मनाया जाता है। भारतीय संस्कृति में, विवाह को सिर्फ़ दो व्यक्तियों के बीच नहीं, बल्कि दो परिवारों के बीच मिलन के रूप में देखा जाता है। विवाह को एक पवित्र बंधन के रूप में देखा जाता है, और ऐसा माना जाता है कि जोड़े सात जन्मों तक एक साथ रहेंगे।

आपसी रिश्तों के जोड़ में कभी हमारा देश बेजोड़ माना जाता था। हमारे यहां जुड़ने वाले अधिकांश रिश्ते जिंदगी की डोर टूटने पर ही टूटते थे, लेकिन अब तस्वीर बदल गई है। आज की फास्ट-पेस लाइफ में रिश्ते भी तेजी से टूट रहे हैं। डिवोर्स

- शेष पृष्ठ 7 पर

150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष पर विशेष

आर्यसमाज द्वारा किये गये 150 ऐतिहासिक कार्य

यह लेख आचार्य राहुलदेव जी द्वारा समस्त जन साधारण, आर्यजनों एवं सुधीपाठकों की जानकारी एवं ज्ञानवर्धन के लिए प्रस्तुत किया गया है। इस लेख में आर्यसमाज के 150 वर्षों के इतिहास में आर्यसमाज द्वारा किए गए 150 ऐतिहासिक कार्यों को उद्धृत किया गया है, जिसका आप भी अपने स्तर पर सोशल मीडिया तथा अन्य संसाधनों से प्रचार कर सकते हैं। - सम्पादक

गतांक से आगे -

77. आर्यसमाज ने मंदिरों में दिए जाने वाली बलि प्रथा के विरुद्ध बहुत से शास्त्रार्थ किये और विजय प्राप्त की है।
78. आर्यसमाज पशु-पक्षियों को मार कर खाने को घोर पाप मानता है और छुडाने के लिए प्रयासरत है।
79. आर्यसमाज ने सदैव शाकाहार का समर्थन किया है क्योंकि शाकाहार के द्वारा प्रकृति का सन्तुलन उत्तम होता है।
80. आर्यसमाज मांसाहार को वेद विरुद्ध और मनुष्य की प्रकृति के प्रतिकूल मानता है।
81. आर्यसमाज जीव हत्या को पाप और प्रकृति के विनाश का कारण मानता है।
82. आर्यसमाज ने वेद पर आधारित कर्म फल सिद्धांत का प्रचार किया और इस पर मौलवियों और पादरियों से शास्त्रार्थ किए हैं।
83. आर्यसमाज ने इस सिद्धांत का प्रचार किया कि प्रकृति अपने आप संसार का निर्माण नहीं करती इसका बनाने वाला ईश्वर है।
84. आर्यसमाज ने अद्वैतवाद और विशिष्ट द्वैतवाद की आंधी में भारतीयों में इस सिद्धांत का भी प्रचार किया कि जीव और ईश्वर दोनों अलग-अलग हैं।
85. आर्यसमाज ने बडे अन्तराल के बाद पूरे विश्व को त्रैतवाद के बारे में समझाया कि ईश्वर, जीव और प्रकृति तीन अनादि पदार्थ होते हैं।
86. आर्यसमाज सदैव सत्य के प्रचार प्रसार में उद्यत रहता है।
87. आर्यसमाज ने पाखंड और अंधविश्वास का विरोध करके समाज को बहुत बड़ी आपदा से रक्षा करता आया है।
88. आर्यसमाज जादू, टोना, टोटका इत्यादि का खंडन करता है।
89. आर्यसमाज ने गण्डे-ताबीज आदि के प्रपंचों से लाखों लोगों को मुक्त करवाया है।
90. आर्यसमाज ने भूत-प्रेत, जादू-टोना, टोटके के भय से समाज की रक्षा की है।
91. आर्यसमाज हाथ की रेखाओं में भविष्य को नहीं मानता, इसके लिए लोगों को जागरूक करता आया है।
92. आर्यसमाज ने पानी के जहाज की यात्रा को पाप मानने का निवारण कराया, जिससे यात्रा और व्यापार करने में सुगमता हुई।
93. आर्यसमाज ने बहुत बडे स्तर पर लोगों को समझाया कि आत्मा कभी नहीं भटकती और किसी को कोई नुकसान नहीं करती।
94. आर्यसमाज ने वेद के प्रचार-प्रसार को अपना उद्देश्य माना और इस पर किए जाने वाली भ्रान्तियों का निवारण किया।
95. आर्यसमाज ने परतंत्र भारत में आर्ष शिक्षा के पुन: गुरुकुल खोलें, आर्य समाज ने डीएवी स्कूल चलाकर शिक्षा के क्षेत्र में ऐतिहासिक कार्य किया।
96. आर्यसमाज ने कन्याओं के लिए सबसे पहले पृथक पाठशाला खोली।
97. आर्यसमाज ने सर्वप्रथम यह बताया कि वेद में केवल जादू, टोना, टोटका के मंत्र नहीं हैं, वेदों मे परा और अपरा दोनों विद्यायें हैं।
98. आर्यसमाज ने देश को सपेरो का देश है इस अभिशाप से मुक्ति दिलायी।
99. आर्य समाज ने यह बताया कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद कोई गडरियों का गीत नहीं है।

- *क्रमशः*

परिवर्तन : आता नहीं है - लाया जाता है।

महाभारत काल से 19वीं सदी तक का परिवर्तन काल

देखें विदेशी आक्रान्ताओं की सत्ता ने भारत का क्या से क्या बना दिया

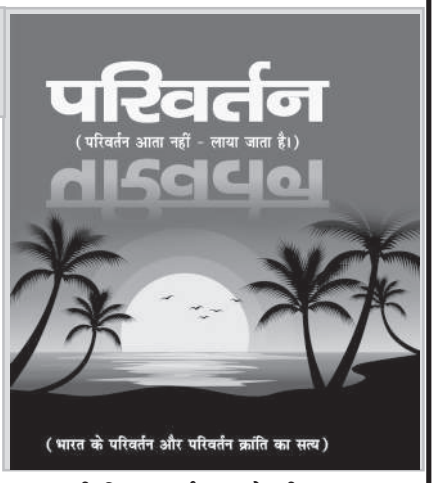

गतांक से आगे -

अभी तक हमने भारत के प्रशासनिक परिवर्तन का विश्लेषण किया कि किस प्रकार हमारे देश पर विदेशी आक्रांताओं का अधिकार हो गया। अब कुछ बिन्दुओं में हम यह भी देखेंगे कि इन सभी विदेशी आक्रान्ताओं की सत्ताओं ने भारत को क्या से क्या बना दिया।

महाभारत से लगभग 4800 वर्ष बाद 18वीं सदी के भारत का संक्षिप्त विश्लेषण करने पर हम भारत में निम्न परिस्थितियों को पाएंगे—

- विदेशी सत्ताओं ने आते ही हमारी भाषा को समाप्त करने का षड्यंत्र शुरू किया, ताकि हमारी भाषा ही नहीं होगी तो हमारी पीढ़ियों को हमारे पिछले गौरवशाली इतिहास का पता कैसे चलेगा?

- पहले मुगल सत्ताओं ने यहां की अधिकारिक भाषा फारसी बनाई और भारत के समस्त सरकारी कामकाज केवल इसी फारसी में होने लगा। फारसी जिसे अरबी भाषा का बिगड़ा रूप कहा जा सकता है। सारे भूलेख फारसी में तैयार किए जाने लगे।

- हमारे लोग भी केवल फारसी ही पढ़ने लगे और उसका एक स्थानीय रूप उर्दू यहां की प्रचलित भाषा बन गई।

- हमारे बड़े-बड़े शिक्षा संस्थानों को नष्ट कर दिया गया। 2700 वर्ष पूर्व लगभग 450 से 470 ईसापूर्व में संचालित तक्षशिला, नालंदा, देलवाड़ा, विक्रमशिला, उदयगिरी, शारदा पीठ (कश्मीर), वल्लभी, सुरभी आदि सब विश्वविद्यालय नष्ट कर दिए गए।

पाठक विचार करें कि आखिर ऐसा क्यों किया गया?

अंग्रेजी सत्ता के यहां आने से पहले के आक्रान्ताओं ने बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों की करोड़ों पुस्तकों और पाण्डुलिपियों को जला दिया था। अंग्रेजों ने बची हुई लाखों पाण्डुलिपियों को जलाया तो नहीं पर उनको यहां से चुराकर अपने देश में ले गए। केवल ले ही नहीं गए बल्कि उनको आज तक भी अनेक स्थानों पर सुरिक्षत रखा गया है। अगर भारत में विद्या थी ही नहीं तो सोचो, आक्रान्ताओं ने जलाया क्या था, अंग्रेजों ने चुराया क्या था? चुराया क्यों था? और उनको यूरोप के पुस्तकालयों में आज तक भी सुरक्षित रखा क्यों था?

सत्ताएं आज भी बदलती हैं पर कोई नई सत्ता या राजा वहां के विश्वविद्यालय, पुस्तकालय, शिक्षा केन्द्र आदि नहीं तोड़ता। बल्कि वे तो अपनी सत्ता की मजबूती के लिए उसका उपयोग करना चाहते हैं। तो कारण क्या था कि वे आक्रान्ता, भाषा बदल रहे थे, मन्दिर तोड़ रहे थे, विश्व-विद्यालय तोड़-तोड़कर पुस्तकों के भण्डार जला रहे थे। वे उन्हें अपने काम में ला सकते थे, पर इसके पीछे बहुत ही मनोवैज्ञानिक और महत्त्वपूर्ण कारण थे। यह कोई केवल धार्मिक उन्माद और गुस्से की कार्यवाही नहीं थी, बल्कि सोची-समझी षड्यन्त्रकारी कार्यवाही थी।

इसका उत्तर स्पष्ट है, ताकि हमारा ज्ञान-विज्ञान, उज्वल और शानदार इतिहास, अतीत हमेशा के लिए नष्ट किया जा सके। हम हमेशा के लिए अपने प्राचीन गौरव को भुला बैठें, और तत्कालीन आक्रांताओं को ही अपना भाग्य विधाता और माई-बाप मानने लगे। यह सब अपने आप नहीं हो गया—बाकायदा इतिहास में घटनाएं आती हैं कि बड़े-बड़े पुस्तकालयों को जलाया गया। नालन्दा, तक्षशिला के 9 मंजिल बने पुस्तकालय में जहां लाखों पांडुलिपियां सुरक्षित थीं और 10 हजार से अधिक छात्र शिक्षा ग्रहण करते थे, को जला दिया गया। कहते हैं महीनों तक उसमें आग लगी रही।

ये सभी आक्रान्ता यहां अपने बहुत पुराने स्वप्नों को पूरा होता देख रहे थे—भारत में अपने राज्य की स्थापना का सपना। इसलिए वे हमारे सभी इतिहास, ज्ञान, धन और आस्था के केन्द्रों को सर्वथा समाप्त करने में ही अपनी सत्ता की मजबूती देख रहे थे और यह बात बाद में सिद्ध भी हुई।

- संस्कृत की शिक्षा केवल धार्मिक कर्मकांडों तक सीमित रह गई और उज्जैन, बनारस, हरिद्वार, प्रयाग जैसे धार्मिक नगरों तक ही सिमट गई। इससे भी दु:खद बात कि इन पाठशालाओं में संस्कृत और शास्त्रों का अध्ययन केवल उच्च वर्ग के बालक ही कर सकते थे। संस्कृत में जो ज्ञान-विज्ञान था वह समाप्त हो गया। संस्कृत केवल कर्मकाण्ड की भाषा बनकर रह गई।

- मुगलों ने हमारे उद्योग-धंधों को समाप्त करने में कोई कसर शेष न रखी, हमें गरीब और गुलाम रखने में ही उनकी सत्ता हमेशा रह सकती थी।

- रात्रि विवाह, सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, विदेश गमन पर रोक, अधार्मिकता, अशिक्षा आदि का प्रचलन मुगल सल्तनतों द्वारा अपनाई गई धर्मान्धता की नीतियों से ही हुआ।

- *क्रमशः*

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

23 जून, 2025
से
29 जून, 2025

200वीं जयन्ती एवं आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष पर आर्यसमाज का हो रहा निन्तर विस्तार

दिल्ली सभा के अन्तर्गत कैलाश कालोनी, नई दिल्ली में आर्य भवन का शिलान्यास

महर्षि दयानंद सरस्वती के 200वें जयंती वर्ष और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों की शृंखला में विश्व व्यापी आर्य समाज निरंतर उन्नति, प्रगति, सफलता और विस्तार की ओर अग्रसर है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जहां एक ओर वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार-प्रसार के विशेष आयोजन किए जा रहे हैं, यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सम्मेलन, सेवा, साधना और समर्पण के विभिन्न कार्यक्रम निरंतर चल रहे हैं, महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओ, आर्य समाज के सिद्धांत, मान्यता और परंपराओ को घर-घर तक पहुंचाया जा रहा है, ढोंग, पाखंड, अंधविश्वास और कुरूतियों के खिलाफ मानव समाज को जागृत किया जा रहा है, देश के समक्ष वर्तमान चुनौतियों से समाज सजग करने के लिए जन जागरण के अभियान चलाए जा रहे हैं, वहीं बहते समय के प्रवाह के साथ-साथ आर्य समाज का निरन्तर विस्तार भी किया जा रहा है।

इस क्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 22 जून 2025 को एच एस 30, कैलाश कॉलोनी मार्केट, नई दिल्ली में एक नए और भव्य "आर्य भवन" का शिलान्यास किया गया। दिल्ली सभा के कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी की अध्यक्षता में श्री राजकुमार जी, अध्यक्ष, आर्य प्रतिभा विकास केंद्र द्वारा किए गए इस शिलान्यास में दिल्ली सभा के प्रधान,

- जारी पृष्ठ 7 पर

कैलाश कालोनी स्थित सभा की सम्पत्ति एच.एस.-30 पर नए भवन के शिलान्यास के अवसर पर यज्ञोपरान्त ताम्र पात्र में वेद संहिताएं, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि एवं अन्य वैदिक साहित्य को नींव में स्थापित करते हुए सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल, श्री राजकुमार, उप प्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा, महामन्त्री श्री विनय आर्य, अन्य अधिकारी एवं उपस्थित आर्यजन।

आर्यजगत के वरिष्ठ मूर्धन्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी का 108 वर्ष की आयु में निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र के पूर्व प्रधान, वरिष्ठ आर्य संन्यासी, महाराष्ट्र में आर्यसमाज के स्तम्भ के रूप में विख्यात, अखण्ड ब्रह्मचारी एवं स्वतन्त्रता सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज (हरिश्चन्द्र गुरुजी) का दिनांक 23 जून, 2025 को 108 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे काफी समय से अस्वस्थ थे और अस्पताल में भर्ती थे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सम्मिलित हुए तथा महाराष्ट्र सभा एवं महाराष्ट्र प्रान्त की आर्यसमाजों के अधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 29 जून, 2025 को आर्यसमाज लातूर में सम्पन्न होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसन्देश परिवार एवं समस्त आर्य जगत की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

महर्षि दयानन्द 200वीं जयन्ती स्मृति डाक टिकट
आर्यजन एवं आर्य संस्थाएं अधिकाधिक खरीदकर स्मृति रूप में रखें एवं प्रयोग करें

यह डाक टिकट
ऑनलाइन खरीदें और घर बैठे प्राप्त करें सम्पूर्ण भारत में होम डिलीवरी की सुविधा
vedicprakashan.com
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का ऑनलाइन स्टोर
96501 83336

आर्यसमाज का प्रकल्प
आर्य समाज मैट्रिमोनी

आर्य परिवारों के विवाह योग्य युवक-युवतियों के विवाह संस्कारों हेतु मनपसन्द जीवनसाथी खोजने/ चुनने की ऑनलाइन सुविधा
अधिक जानकारी के लिए लॉगइन/स्कैन/सम्पर्क करें
7428894012
matrimony.thearyasamaj.org

11वां अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस
21 जून, 2025

सभा के आह्वान पर दिल्ली में विभिन्न स्थानों पर योग शिविर सम्पन्न

योग विद्या है भारत की वैदिक पुरातन धरोहर - धर्मपाल आर्य, प्रधान

वैदिक संस्कृति सदा से पर्व प्रिय रही है। यूं तो जून के महीने में अधिकांशतया पर्व विशेष नहीं मनाए जाते, किंतु आर्य वीर /वीरांगना दल द्वारा चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर तथा 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस और 21 जून को विश्व योग दिवस आदि पर्वों को आर्य समाज उत्साह से समारोह पूर्वक मनाता है। विश्व योग दिवस जब से प्रारंभ हुआ है तब से ही नहीं बल्कि आर्य समाज के 150 वर्षों के इतिहास में महर्षि पतंजलि के योगदर्शन के अनुसार अष्टांग योग को हमेशा से अपनाया गया है। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं पर आधारित यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना और समर्पण आर्य समाज की मूल परंपरा रही है। अब जबकि 21 जून को विश्व योग दिवस पिछले 11 वर्षों से हर्षोल्लास से मनाया जाता रहा है तो आर्य समाज भी एक विश्व व्यापी संगठन के रूप में इस मानव कल्याण के अभियान में पूरी निष्ठा से सम्मिलित होता रहा है और इस वर्ष भी 21 जून 2025 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों, आर्य संगठनों और अन्य संस्थाओं द्वारा योग कक्षाओं, शिविरों के कार्यक्रम संपन्न हुए।

इस अवसर पर आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश द्वारा आर्य समाज प्रीत विहार में शहीद भगत सिंह एवं दुर्गा भाभी शाखा द्वारा योग शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें योगाचार्य श्री दिवाकर जी, श्री रवि जी ने योगासनों के महत्व को प्रदर्शित

- शेष पृष्ठ 7 पर

आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष के कुछ अति विशेष प्रकाशन
आइए, साहित्य प्रकाशन में सहभागी और सहयोगी बनें

मैं आर्य समाजी कैसे बना ?

इस विषय में सभी आर्यजन अपने या अपने परिवार के पहले पहल आर्यसमाजी बनने की रोचक घटना और कारण को लिखकर अवश्य भेजें। सर्वश्रेष्ठ 150 घटनाओं की ऐतिहासिक पुस्तक का प्रकाशन किया जाएगा। रचना अधिकतम 500 शब्दों में ही लिखकर भेजें।

आर्य समाजी जेलों में

इस पुस्तक में उन सभी नामों का संकलन करने का विचार है, जो आजादी के आन्दोलन में, हैदराबाद सत्याग्रह में, हिन्दी सत्याग्रह में, गौराक्षा आन्दोलन में, सिन्ध सत्यार्थ प्रकाश सत्याग्रह, पटियाला केस आदि में समर्पित महानुभाव - जिनको किसी भी सज्जन का नाम पता लगे-किस जेल में गए थे- किस कारण से गए थे तो शीघ्र ही अवश्य लिखकर भेजें।

आर्य समाज Today

वर्तमान आर्य समाज की संस्थाओं की सटीक जानकारी एक स्थान पर एकत्र करने हेतु। इस विशेष प्रकाशन को किया जा रहा है, इससे पूर्व आर्य संस्थाओं से जुड़ी जानकारियों का प्रकाशन शताब्दी समारोह के समय किया गया था। समस्त आर्य समाजें अपने समाज की गतिविधियों सहित विशेष जानकारियां अवश्य भेजें।

संस्मरण एवं श्रद्धांजलि

अपने आत्मीय महानुभावों का स्मरण, अपने पूज्य माता-पिता/गुरु/आचार्य जिन्होंने आपके जीवन में आर्यसमाज का प्रकाश करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनको श्रद्धांजलि देते हुए परिचय फोटो सहित। ये प्रकाशन सहयोग राशि के साथ होगा। इसका एक भाग लगभग - 400 पृष्ठ का होगा।

एक पृष्ठ पर एक परिचय 5000/- रूपये की अल्प राशि से प्रकाशित होगा - दो प्रतियां नि:शुल्क दी जाएंगी।

ज्ञान ज्योति पर्व आयोजन स्मारिका

200वीं जयन्ती और 150वें स्थापना दिवस के देश-विदेश में हुए विशेष आयोजनों की संक्षिप्त रिपोर्ट, फोटोग्राफ्स, प्रमुख व्यक्तियों के भाषण, विशेष घटनाएं आदि का संग्रह, प्रकाशन करना इस प्रकाशन का उददेश्य रहेगा।

आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस पर आर्य सन्देश विशेषांक हेतु ऐतिहासिक लेख एवं घटनाक्रमों पर आधारित प्रेरक प्रसंग अवश्य भेजें

उपरोक्त ऐतिहासिक प्रकाशनों से जुड़ी जानकारी, लेख एवं अन्य सामग्री डाक/ईमेल अथवा व्हाट्सएप्प पर शीघ्र-अतिशीघ्र भेजें-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) 15 - हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Email : aryasabha@yahoo.com; 9540097878

बन्धुओ, आज आर्य समाज जब महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जयन्ती वर्ष और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष को हर्षोल्लास से मना रहा है, तब हमें कुछ विशेष पुस्तकों के प्रकाशन में बढ़-चढ़ कर आगे आना चाहिए। इसके लिये यह आवश्यक नहीं है कि आप मान्यता प्राप्त लेखक ही हों, इसके लिए आपकी केवल दृढ़ इच्छा शक्ति होनी चाहिए और आप अपनी सरल भाषा में ही निम्नलिखित विषयों पर आधारित लेख, ऐतिहासिक तथ्य, आर्य समाज की संस्थाओं के विषय में जानकारी, संस्मरण एवं श्रद्धाजंलि तथा ज्ञान ज्योति पर्व आयोजन स्मारिका, आर्य सन्देश विशेषांक में लेख आदि का सहयोग करके सहभागी बने।

साप्ताहिक स्वाध्याय

स्वामी दयानन्द की महानता

गतांक से आगे-

दयानन्द का चरित्र मेरे लिए ईर्ष्या और दु:ख का विषय है। महर्षि दयानन्द हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियों में, सुधारकों में और श्रेष्ठ पुरुषों में एक थे। उनके जीवन का प्रभाव हिन्दुस्तान पर बहुत अधिक पड़ा है।

-महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गांधी

मेरा सादर प्रणाम हो उस महान् गुरु दयानन्द को, जिसकी दृष्टि ने भारत के आध्यात्मिक इतिहास में सत्य और एकता को देश और जिसके मन ने भारतीय जीवन के सब अंगों को प्रदीप्त कर दिया। जिस गुरु का उद्देश्य भारतवर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्त्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति में लाना था, उसे मेरा बारम्बार प्रणाम है।

मैं आधुनिक भारत के मार्गदर्शक उस दयानन्द को आदरपूर्वक श्रद्धांजलि देता हूं, जिसने देश की पतितावस्था में सीधे व सच्चे मार्ग का दिग्दर्शन कराया।

-डॉ. रवीन्द्रनाथ ठाकुर

वह दिव्य ज्ञान का सच्चा सैनिक, विश्व को प्रभु की शरण में लाने वाला योद्धा, और मनुष्यों व संस्थाओं का शिल्पी तथा प्रकृति द्वारा आत्मा के मार्ग में उपस्थित की जाने वाली बाधाओं का वीर विजेता था और इस प्रकार मेरे समक्ष आध्यात्मिक क्रियात्मकता की एक शक्ति सम्पन्न मूर्ति उपस्थित होती है। इन दो शब्दों का, जो कि हमारी भावनाओं के अनुसार एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं, मिश्रण ही दयानन्द की उपयुक्त परिभाषा प्रतीत होती है। उसके व्यक्तित्व की व्याख्या की जा सकती है-एक मनुष्य, जिसकी आत्मा में परमात्मा है, चर्म चक्षुओं में दिव्य तेज है और हाथों में इतनी शक्ति है कि जीवन-तत्त्व से अभीष्ट स्वरूप वाली मूर्ति घड़ सके तथा कल्पना को क्रिया में परिणत कर सके। वह स्वयं दृढ़ चट्टान थे। उनमें दृढ़ शक्ति थी कि चट्टान पर घन चलाकर पदार्थों को सुदृढ़ व सुडौल बना सकें। प्राचीन सभ्यता में विज्ञान के गुप्त भेद विद्यमान हैं, जिनमें से कुछ को अर्वाचीन विद्याओं ने ढूंढ लिया है, उनका परिवर्तन किया है और उन्हें अधिक समृद्ध व स्पष्ट कर दिया है, किन्तु दूसरे अभी तक निगूढ़ ही बने हुए हैं। इसलिए दयानन्द की इस धारणा में कोई अवास्तविकता नहीं है कि वेदों में विज्ञान सम्मत तथा धर्मिक सत्य निहित हैं।

वेदों का भाष्य करने के बारे में मेरा विश्वास है कि चाहे अंतिम पूर्ण अभिप्राय कुछ भी हो, किन्तु इस बात का श्रेय दयानन्द को ही प्राप्त होगा कि उसने सर्वप्रथम वेदों की व्याख्या के लिए निर्दोष मार्ग का आविष्कार किया था। चिरकालीन अव्यवस्था और अज्ञान परम्परा के अन्धकार में से सूक्ष्म और मर्मभेदी दृष्टि से उसी ने सत्य को खोज निकाला था। जंगली लोगों की रचना कही जाने वाली पुस्तक के भीतर उसके धर्म- पुस्तक होने का वास्तविक अनुभव उन्होंने ही किया था। ऋषि दयानन्द ने उन द्वारों की कुंजी प्राप्त की है, जो युगों से बन्द थे और उसने पटे हुए झरनों का मुख खोल दिया।

ऋषि दयानन्द के नियम बद्ध कार्य ही उनके आत्मिक शरीर के पुत्र हैं, जो सुन्दर, सुदृढ़ और सजीव हैं तथा अपने कर्त्ता की प्रत्याकृति हैं। वह एक ऐसे पुरुष थे जिन्होंने स्पष्ट और पूर्ण रीति से जान लिया था कि उन्हें किस कार्य के लिए भेजा गया है। **- श्री अरविन्द घोष**

ऋषि दयानन्द ने भारत के शक्ति-शून्य शरीर में अपनी दुर्द्धर्ष शक्ति, अविचलता तथा सिंह-पराक्रम फूंक दिए हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती उच्चतम व्यक्तित्व के पुरुष थे। यह पुरुषसिंह उनमें से एक था जिन्हें यूरोप प्राय: उस समय भुला देता है जब कि वह भारत के सम्बन्ध में अपनी धारणा बनाता है; किन्तु एक दिन यूरोप को अपनी भूल मानकर उसे याद करने के लिए बाधित होना पड़ेगा, क्योंकि उसके अन्दर कर्मयोगी, विचारक

और नेता के उपयुक्त प्रतिभा का दुर्लभ सम्मिश्रण था।

दयानन्द ने अस्पृश्यता व अछूतपन के अन्याय को सहन नहीं किया और उससे अधिक उनके अपहृत अधिकारों का उत्साही समर्थक दूसरा कोई नहीं हुआ। भारत की स्त्रियों की शोचनीय दशा को सुधारने में भी दयानन्द ने बड़ी उदारता व साहस से काम लिया। **-क्रमश:**

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी 'महर्षि दयानन्द' से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन www.vedicprakashan.com अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Organization of Arya Samaj

Changes keep on happening in small matters according to time, but in terms of representation in general principles, the organization of Aryasamaj is ideal in a way. The condition of becoming a member is that the person should have been given donation (chanda) for eleven months. Donation is 1% of income. Even the poorest of the poor can remain member in the Arya Samaj, because there is no fixed amount to be paid to vote- it is one percentage of the smallest income. This is the reason why Arya Samaj can never become an association of the rich. Office bearers are elected annually. The election of representatives is necessary for the third year. The gatherings formed according to the rules of Arya Samaj reflect the opinion of the general public. Leave aside Switzerland and America, generally the political organizations of other countries are not such good representatives of public opinion. It is the result of the strength of the organization that the strength of the Arya Samaj has remained the same even after facing several religious and political injuries.

There can be an objection to the organization of Arya Samaj. Aryasamaj does not have the kind of arrangement that is needed to solve religious questions of a religious institution. Religious qualification is not necessary for any of the members and Office bearers of Arya Sabhas, Arya Pratinidhi Sabhas or Sarvadeshika Sabha. The result is that there is not a single authentic assembly in the entire Aryan world which can lead the Aryan people religiously. Efforts have been made remedy. Somewhere the Vidvat Parishad has been formed and somewhere the Arya Dharmasabha has been established. Many gentlemen may call this the imperfection of the organization, but the author is of the opinion that the organization is not as much at fault as the Arya Sabha members. It is the duty of the Arya Sabhasads to send a large number of such scholars to the Arya Pratinidhi Sabhas, who have the right to give opinion about religion. The only fault of the rules is that they did not clearly tell the consenters how they should choose the persons to be their representatives, but wise men do not even need such detailed instructions. Today, if the dominance of practical men is visible in the management of Arya Samaj, then it is only because of the neglect of the Arya Sabhasads. The idea of setting up another parallel assembly with the Arya Pratinidhi Sabhas is against the intention that Rishi Dayanand had in mind.

The main features of the Arya Samaj organization created by Rishi Dayanand are two. It is absolutely independent and complete in itself and at the same time is the true representative of public opinion. Aryasamaj does not expect any other organization for the welfare of its members. If the opportunity arises, it can fulfill the social, religious and political needs of his members. It is the best means of reflecting public opinion. These are the two reasons why it is stable. If the Arya Samaj had not had such a good organization, then those who have been trying to topple it would have been successful long ago.

Here, in relation to Maharishi Dayanand and his famous book 'Satyartha prakash', the opinions expressed by various scholars from time to time have been compiled, which can only indicate their importance.

To be Continue............

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

12वीं पास वंचित छात्रों को उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति
Pragati
भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक छात्रों को आर्य समाज द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्ति के बारे में पूरी जानकारी (इंजीनियरिंग/मेडिकल/कानून/रक्षा आदि)
aryapragati.com
9311721172

पृष्ठ 2 का शेष

शर्मसार रिश्ते – दरकता समाज....

जैसा शब्द जो पहले यदा-कदा सुनने को मिलता था, अब बहुत कॉमन हो गया है।

सात जन्मों का साथ अब सात दिन या सात साल का भी मुश्किल निभ रहा है। जहाँ पहले आपसी सहमति या कानून द्वारा संबंध विच्छेद करके अलग होते थे, अब तो मारकाट मची है। कहीं पत्नी द्वारा पति का तो कहीं पति द्वारा पत्नी का कत्ल किया जा रहा है।

इसके अलावा, जिन रिश्तों को जैसे सास-दामाद को माता और पुत्र की तरह देखा जाता था, अब ऐसे रिश्तों की मर्यादा तार-तार होकर अखबारों की खबरें बन रही हैं।

रिश्तों की सीमाओं और सम्मान का ध्यान रखना आवश्यक है। हर रिश्ते की अपनी मर्यादा होती है, जिसका पालन करना जरूरी है। मर्यादा का उल्लंघन करने से रिश्तों में परिवार का रूप तो बिगड़ता ही है, साथ ही समाज का भी रूप बिगड़ रहा है। सोचिए, जब रिश्तों में प्रेम, विश्वास और मर्यादा ही नहीं बचेगी, तो न हमारी संस्कृति बचेगी, न समाज। तो फिर एक महान राष्ट्र की संकल्पना कैसे की जाएगी? आज रिश्तों को सहेजना और उनकी मर्यादा बचाना, यह जिम्मेदारी हम सबकी है। हम साथ रहकर, आवाज उठाकर और बच्चों को संस्कार देकर ही इसे बचा सकते हैं, वरना कल न रिश्ते बचेंगे, न समाज। -संपादक

पृष्ठ 5 का शेष

करते हुए विश्व योग दिवस पर उपस्थित आर्यजनों, वीर वीरांगनाओ को योगासन कराए, इसी क्रम में आर्य वीर दल के शिक्षकों द्वारा आर्य समाज पंजाबी बाग में तथा आर्य समाज सागरपुर में विशेष शिविर संपन्न हुए, प्रिंसेस पार्क, सांगली मैस में आर्य समाज की प्रचारक महिलाओं द्वारा भी एक सुंदर योग शिविर का आयोजन संपन्न हुआ। आर्य समाज बसई दारापुर के प्रांगण में योगाचार्य श्री किशन जी द्वारा विश्व योग दिवस पर योगासनों की विशेष कक्षा में हर आयु वर्ग के स्त्री पुरुष सम्मिलित हुए, जिन्हें योगासनों का महत्व और नियमित करने की उपयोगिता से आवगत कराया गया। उपरोक्त योग दिवस के कार्यक्रमों में आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों की सहभागिता और सहयोग अत्यंत प्रशंसनीय रहा।

पृष्ठ 4 का शेष

दिल्ली सभा के अन्तर्गत कैलाश कालोनी...

श्री धर्मपाल आर्य जी, महामंत्री, श्री विनय आर्य जी, उप प्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य जी, श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, श्री अशोक गुप्ता जी, श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता जी, श्री वीरेंद्र सरदाना जी, श्री सतीश चडडा जी, श्री जोगेंद्र खटटर जी, श्री हरिओम बंसल जी, श्री रवि देव गुप्ता जी, श्री विद्या प्रसाद मिश्र जी, श्री सुखवीर आर्य जी, डॉ मुकेश आर्य जी एवं क्षेत्रीय आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों सहित वेद प्रचार मंडलों और आर्य समाजों के प्रधान, मंत्री इत्यादि महानुभाव उपस्थित रहे। यज्ञ से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ, उपस्थित यजमानों ने आहुति देकर विश्व कल्याण की कामना की, उपस्थित महानुभावों ने यजमानों को पुष्प वर्षा करके आशीर्वाद प्रदान किया। वेद मंत्रो के उच्चारण के साथ भूमि पूजन किया गया और ताम्र पात्र के बॉक्स में वेद संहिता, सत्यार्थ प्रकाश और संस्कार विधि आदि ग्रंथों को भवन की नीव में रखा गया।

इस अवसर शिलान्यास समारोह में उपस्थित सभी अधिकारियों ने अपने-अपने कर कमलों से नीव में ईंटे रखकर भवन की भव्यता के साथ आर्य समाज के विचारों की मजबूती का परिचय दिया तथा इसकी पूर्णता के लिए सहयोग देने का संकल्प लिया और ईश्वर से प्रार्थना की।

शोक समाचार

माता परमेश्वरी देवी जी का निधन

वरिष्ठ आर्य नेता, दानवीर, उद्योगपति स्व. श्री चौधरी मित्रसेन आर्य जी की धर्मपत्नी एवं हरियाणा सरकार में पूर्व वित्त मन्त्री श्री कैप्टन अभिमन्यु जी की पूज्या माता श्रीमती परमेश्वरी देवी जी का दिनांक 20 जून, 2025 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से शमशान घाट पर किया गया। दिल्ली सभा, हरियाणा सभा के अधिकारियों के साथ-साथ अनेकों राजनैतिक नेताओं, योग गुरु स्वामी रामदेव, स्वामी सम्पूर्णानन्द सहित अनेक महानुभावों में पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा रविवार 29 जून, 2025 को प्रात: 11 बजे से टैगोर सभागार, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में सम्पन्न होगी।

श्री कृपाल सिंह आर्य जी को मातृशोक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एवं आर्यसमाज शादीखामपुर के अधिकारी श्री कृपाल सिंह आर्य जी की पज्या माता श्रीमती इकबाल कौर जी का दिनांक 21 जून, 2025 को आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से संतनगर करोलबाग स्थित शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 29 जून, 2025 को सी.ए.आर. कन्वेंशन सेंटर पूसा, नई दिल्ली में सम्पन्न होगी।

श्रीमती विमला गुप्ता जी का निधन

आर्यसमाज अमर कालोनी की पूर्व वरिष्ठ सदस्या एवं हरिद्वार सप्त सरोवर स्थित व्यास आश्रम की संचालिका श्रीमती विमल गुप्ता जी का दिनांक 21 जून, 2025 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 24 जून, 2025 को व्यास आश्रम, सप्त सरोवर मार्ग, हरिद्वार में सम्पन्न हुई।

श्री रामभरोसे आर्य को भ्रातृशोक

आर्यसमाज जहांगीरपुरी के मन्त्री श्री रामभरोसे आर्य जी के छोटे भाई श्री रामपुकार जी का दिनांक 16 जून, 2025 को 64 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से आजादपुर शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 27 जून बवाना स्थित उनके आवास पर सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

''महर्षि दयानन्द को आपरेटिव अर्बन थ्रिफ्ट एंड क्रेडिट सोसाइटी लि.''

सदस्यता प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर

'पहले आओ-पहले पाओ' के आधार पर केवल 100 सदस्य बनाए जाएंगे

आवेदन की अन्तिम तिथि 31 जुलाई, 2025

सभी सम्मानित सदस्यों को जानकर हर्ष होगा की आपकी सोसाइटी प्रगति की ओर बढ़ रही है। गत कार्यकारिणी बैठक में निर्णय लिया गया है कि हम आपके परिवार के सदस्यों और परिचित व्यक्तियों को भी सदस्य बनाने जा रहे हैं। इस अवसर को ''पहले आओ - पहले पाओ'' के आधार पर सीमित 100 सदस्यता के लक्ष्य के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है।

सदस्यता के लिए आवश्यक दस्तावेज और औपचारिकताएं निम्नलिखित हैं।

- सदस्यता फॉर्म
- 2 पासपोर्ट साइज फोटो
- आधार कार्ड / पैन कार्ड
- न्यूनतम 4 शेयर (प्रति शेयर ₹500)
- कंपल्सरी डिपाजिट (न्यूनतम 200 प्रति माह)
- एडमिशन फीस ₹100/-

सदस्यता ग्रहण करने के लिए निम्न नंबर पर संपर्क करे-
Phone No. : 011-44775498/ 9311413920
Email id : swamidayanandsociety@gmail.com

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में सदस्यगण अपना शुल्क भेजें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरस्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक आपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अत: ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2014 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1500/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। आप अपना शुल्क सीधे निम्नांकित बैंक खाते में भी जमा करा सकते हैं- " Arya Sandesh Saptahik "

A/c No. 1098101002787 IFSC Code: CNRB0001098
Canara Bank, Parliament Street, New Delhi

कृपया शुल्क जमा कराने के उपरान्त डिपोजिट स्लिप/मैसेज का फोटो 9540040322 पर अवश्य भेजें- *सम्पादक*

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

सोमवार 23 जून, 2025 से रविवार 29 जून, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 26-27-28/06/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 25 जून, 2025

प्रतिष्ठा में,

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश एवं विदर्भ, नागपुर के तत्त्वावधान में

10 दिवसीय तेजस्विनी आर्य वीरांगना दल आत्मरक्षा एवं चरित्र निर्माण शिविर संपन्न

आर्य वीर/ वीरांगना दल के चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिवरों के आयोजनों की श्रृंखला में आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश, विदर्भ, नागपुर द्वारा आर्य समाज बेलखेड़ तथा श्री गजानन महाराज मंदिर समिति के तत्वावधान में आर्य वीरांगनाओं का शिविर 11 जून से 20 जून 2025 तक सफलताओं के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर दिल्ली सभा के प्रचारक आचार्य शैलजी, आचार्य श्री भुवनेश्वर, उड़ीसा, आर्य वीरांगना हर्षिता बैतूल के निर्देशन में सैंकड़ो आर्य वीरांगनाओं ने वैदिक संस्कृति, संस्कारों के साथ शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के लिए लाठी, भाला, लेजियम, सूर्य नमस्कार, सर्वांगसुंदर व्यायाम और कौशल विकास का प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रतिदिन संध्या, हवन के साथ बौद्धिक कक्षाओं का भी आयोजन किया गया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि सभा प्रधान श्री सत्यवीर शास्त्री जी, श्री मयंक चतुर्वेदी, सुदर्शन जी, श्री वसंत राव काले जी, श्री अरविंद देठे जी, श्री गोपाल जी, श्री अनिल जी, उषा जी बाहेती, जयसिंह जवेरी, मधुकर जी, विनय राठी आदि महानुभावों का पीत वस्त्र और शाल देकर स्वागत सम्मान किया गया। सभी आयोजक, कार्यकर्ताओं ने शिविर को सफल बनाने में भरपूर सहयोग प्रदान किया। - ***संयोजक***

आर्यजन कृपया ध्यान दें

समस्त आर्यजनों की सूचनार्थ है कि कुछ समय पूर्व की दिल्ली में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तिथियां 9-10-11-12 अक्टूबर 2025 की घोषणा गई थीं। किन्तु पर्व-त्यौहारों होने एवं स्थान की अनुपलब्धता के कारण अब यह साद्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 30 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2025 को आयोजित किया जाना सुनिश्चित किया गया है। अतः इस परिवर्तन को स्वीकार करें और अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 30 अक्टूबर से 2 नवम्बर, 2025 में दिल्ली पधारने के लिए अपनी तैयारियों में जुट जाएं।

- ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह